❐ डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी

घुमक्कड़शास्त्री राहुल

बहुआयामी कृतित्व वाले महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने इतिहास, दर्शन, धर्म, भाषाशास्त्र, विज्ञान, राजनीति आदि विविध विषयों पर अनेक महत्वपूर्ण निबन्ध लिखे हैं तथा बहुमूल्य कृतियों का सृजन किया है। उनके कहानीकार, आलोचक, निबन्धकार, नाटककार, आत्मकथा लेखक तथा जीवनीकार रूप ने हिन्दी साहित्य को विशिष्ट समृद्धि प्रदान की है। एक कट्टर वैष्णव परिवार में जन्मे राहुल ने पहले आर्य समाज और फिर बौद्ध धर्म के रास्ते से गुजरते हुए मार्क्सवाद की मंजिल तय की थी। एक साहित्यकार या लेखक के रूप में ही नहीं, विचारक और चिन्तक के रूप में भी उनकी व्यापक प्रतिष्ठा रही है। सामाजिक या राजनीतिक कार्यकर्ता की हैसियत से विविध गतिविधियों के संचालन एवं क्रियान्वयन में रुचिपूर्वक भाग लेने के साथ-साथ उन्होंने गंभीर शोधकर्ता के दायित्व का भी भलीभाँति निर्वाह किया था। चाहे असहयोग आंदोलन या किसान आन्दोलन में जनता के साथ सक्रिय भागीदारी हो या बौद्ध-दर्शन और बौद्ध साहित्य के अनुद्घाटित अंशों की अनुसंधानपरक व्याख्या– दोनों भिन्न क्षेत्रों में राहुल के सहज एवम् पाण्डित्यपूर्ण व्यक्तित्व की झलक पाई जा सकती है।

वास्तव में राहुल के सम्पूर्ण साहित्य में जो तन्मयता है, गांभीर्य है उसका कारण उनका व्यापक जीवनानुभव है; भ्रमण के दौरान जीवन की बहुरंगी छटाओं तथा विरूपताओं का साक्षात्कार है। 'कागद की लेखी' के बजाय 'आंखिन देखी' पर भरोसा करने के कारण ही उनका साहित्य प्रभविष्णुता-संपन्न है।

घुमक्कड़ी पर केन्द्रित तथा १९४८ में प्रकाशित १६८ पृष्ठ की कृति 'घुमक्कड़ शास्त्र' की भूमिका में राहुल ने लिखा है–''घुमक्कड़ी का अंकुर पैदा करना इस शास्त्र का काम नहीं, बल्कि जन्मजात अंकुरों की पुष्टि, परिवर्धन तथा मार्ग प्रदर्शन इस ग्रंथ का लक्ष्य है।'' यद्यपि लेखक ने इस कृति में यह दावा नहीं किया है कि 'घुमक्कड़ों के लिए उपयोगी सभी बातें सूक्ष्म रूप से यहाँ (कृति में) आ गई है, तथापि जिन शीर्षकों में कृति को विभाजित किया गया है वे भ्रमण के महत्व के साथ-साथ घुमक्कड़ी से संबंधित विविधि आयामों का विस्तृत विवेचन करते हैं। पुस्तक का पहला निबन्ध है 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा'। निबन्ध की शुरुआत में लेखक ने शीर्षक की संस्कृतनिष्ठ भाषा का कारण बताते हुए लिखा है–''आखिर हम शास्त्र लिखने जा रहे हैं, फिर शास्त्र की परिपाटी को तो मानना ही पड़ेगा।'' 'जिज्ञासा' के बारे में वे कहते हैं–''शास्त्रों में जिज्ञासा ऐसी चीज के लिए होनी बतलाई गई है जो कि श्रेष्ठ तथा व्यक्ति और समाज के लिए परम हितकारी हो।'' इसी क्रम में लेखक ने ब्रह्म को जिज्ञासा का विषय बनाने के लिए व्यास का उल्लेख किया है और यह घोषणा की है कि– ''मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी। घुमक्कड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नहीं हो सकता।''

राहुलजी ने दुनिया को गतिशील बनाने तथा विकास के रास्ते प्रशस्त करने का श्रेय घुमक्कड़ी को ही दिया है। 'घुमक्कड़-शास्त्र' के तीसरे पृष्ठ में वे लिखते हैं– ''कोलम्बस और वास्को द गामा दो घुमक्कड़ ही थे जिन्होंने पश्चिमी देशों के बढ़ने का रास्ता खोला।'' घुमक्कड़ धर्म की आवश्यकता का बखान करते हुए उन्होंने लिखा है– ''जिस जाति या देश ने इस धर्म को अपनाया, वह चारों फलों का भागी हुआ और जिसने इसे दुराया, उसके लिए नरक में भी ठिकाना नहीं। आखिर घुमक्कड़ धर्म को भूलने के कारण ही हम सात शताब्दियों तक धक्का खाते रहे, ऐरे-गैरे जो भी आये, हमें चार लात लगाते गए।''

अपने कथ्य के विवेचन में लेखक ने शैली को अत्यंत रोचक तथा भाषा को सहज बनाए रखा है। राहुल की मान्यता है कि दुनिया के अधिकांश धर्मनायक घुमक्कड़ रहे हैं। बुद्ध को सर्वश्रेष्ठ घुमक्कड़ घोषित करते हुए राहुल ने बताया है कि बुद्ध ने सिर्फ पुरुषों के लिए ही नहीं स्त्रियों के लिए भी घुमक्कड़ी का उपदेश दिया था। राहुल लिखते हैं– ''घुमक्कड़ धर्म, ब्राह्मण धर्म जैसा संकुचित धर्म नहीं है, जिसमें स्त्रियों के लिए स्थान न हो। स्त्रियाँ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसमें उतना ही अधिकार रखती हैं, जितना पुरुष।'' उनके अनुसार शंकराचार्य को देश की चारों दिशाओं की यात्रा ने ही, घुमक्कड़ी धर्म ने ही, बड़ा बनाया। इसी प्रकार रामानन्द, चैतन्य, ईसा, गुरुनानक, दयानन्द आदि भी इसी धर्म के बल-बूते पर महान् हुए हैं। इसीलिए राहुल ने घुमक्कड़ धर्म को संसार का 'अनादि सनातन धर्म' कहा है और उसे 'आकाश की तरह महान् और समुद्र की तरह विशाल' माना है। उनकी धारणा है कि ''घुमक्कड़ी के लिए चिन्ताहीन होना आवश्यक है और चिन्ताहीन होने के लिए घुमक्कड़ी आवश्यक है। दोनों अन्योन्याश्रय होना दूषण नहीं भूषण है।'' इसी लेख में वे स्पष्ट करते हैं कि घुमक्कड़ धर्म की 'दीक्षा वही ले सकता है, जिसमें बहुत भारी मात्रा में हर तरह का साहस हो।' लेख का समापन करते हुए वे इस्माइल मेरठी की दो पंक्तियाँ का हवाला देते हैं–

सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ,
जिन्दगी गर कुछ रही तो नौजवानी कहाँ।

अपनी पाठ्यपुस्तक में पढ़े हुए इस शेर ने राहुल को बचपन से ही यात्रा की ओर उन्मुख कर दिया था। घूमने-फिरने में व्यापक रुचि का कारण नाना-नानी के यहाँ लालन-पालन भी माना जा सकता है। सेना में सिपाही के रूप में उनके नाना ने दक्षिण भारत का व्यापक भ्रमण किया था। अवकाश ग्रहण के बाद नाती केदार (राहुल) को नाना के मुख से अतीत के रोचक यात्रा-वृत्तान्तों को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ।

घर छोड़कर यात्रा के प्रति आकृष्ट होने का एक बड़ा कारण था अल्पावस्था में उनका बेमेल विवाह। अपनी वायु से ५ वर्ष बड़ी पत्नी को पाकर वे अन्यमनस्क होकर उमरपुर के बाबा परमहंस के पास बैठने लगे। बाबाजी ने राहुल को संसार भ्रमण का परामर्श दिया। इन सभी बातों ने मिलकर केदार को घुमक्कड़ बना दिया।

भ्रमण के प्रति इस आकर्षण ने राहुल को जीवन और जगत के व्यापक अनुभव की जानकारी दी। इसे उलटकर यों भी कह सकते हैं कि जीवन और जगत के बारे में अपनी जिज्ञासा के कारण ही उन्होंने घुमक्कड़ी वृत्ति अपनायी। (जो भी हो इस रुझान ने जिन ग्रन्थों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया, वे हैं– मेरी लद्दाख यात्रा, लंका, तिब्बत में सवा वर्ष मेरी यूरोप यात्रा, मेरी तिब्बत यात्रा, यात्रा के पत्रे, जापान, ईरान, रूस में पच्चीस मास, घुमक्कड़ शास्त्र, एशिया के दुर्गम खण्डों में। इन कृतियों को यात्रा साहित्य के अंतर्गत परिगणित किया जाता है।

जीवनी साहित्य के अंतर्गत उनकी निम्नलिखित पुस्तकें रखी जा सकती हैं– मेरी जीवन यात्रा (१, २) सरदार पृथिवी सिंह, नये भारत के नये नेता, राजस्थानी रनिवास, बचपन की स्मृतियाँ, अतीत से वर्तमान, स्टालिन, कार्ल मार्क्स, लेनिन, माओत्से-तुंग, घुमक्कड़ स्वामी, असहयोग के मेरे साथी, जिनका मैं कृतज्ञ, वीर चंद्रसिंह गढ़वाली।

यात्रा और भ्रमण से संबंधित अन्य कृतियाँ हैं– सोवियत भूमि (१, २), सोवियत मध्य एशिया, किन्नर देश, दार्जिलिंग परिचय, कुमाऊँ, गढ़वाल, नेपाल, हिमाचल प्रदेश, जौनसार-देहरादून, आजमगढ़-पुरातत्व।

राहुलजी ने घुमक्कड़ी के मार्ग में धन-संपत्ति की अपेक्षा बल-बुद्धि की महत्ता पर बल दिया है– ''घुमक्कड़ को जेब पर नहीं अपनी बुद्धि बाहु और साहस पर भरोसा रखना चाहिए।'' (घुमक्कड़ शास्त्र, पृष्ठ २५)। परन्तु इसी कृति में लेखक ने घुमक्कड़ी को हल्के रूप में ग्रहण करने वालों को सचेत करते हुए उनके दायित्व को भी रेखांकित किया है– ''घुमक्कड़ को समाज पर भार बनकर नहीं रहना है। उसे आशा होगी कि समाज और विश्व के हरेक देश के लोग उसकी सहायता करेंगे लेकिन उसका काम आराम से भिखमंगी करना नहीं है। उसे दुनिया से जितना लेना है, उससे सौ गुना अधिक देना है। जो इस दृष्टि से घर छोड़ता है वही सफल और यशस्वी घुमक्कड़ बन सकता है।''

घुमक्कड़ी के लिए उपयुक्त आयु और अनिवार्य शैक्षणिक योग्यता का विवेचन करते हुए राहुलजी ने अपने अनुभव से यह बताया है कि, ''जिस व्यक्ति में महान घुमक्कड़ का अंकुर है, उसे चाहे कुछ साल भटकना ही पड़े, किन्तु किसी आयु में भी निकलकर वह रास्ता बना लेगा। इसलिए मैं अधीर तरुणों के रास्ते में रुकावट डालना नहीं चाहता। लेकिन ४० साल की घुमक्कड़ी के तजुर्बे ने मुझे बतलाया है कि यदि तैयारी के समय को थोड़ा पहले ही बढ़ा दिया जाय तो आदमी आगे बड़े लाभ में रहता है।'' (घुमक्कड़ शास्त्र पृ० ३०)

लेखक ने घुमक्कड़ के लिए इतिहास और भूगोल-ज्ञान की अनिवार्यता की ओर तो संकेत किया ही है, भाषाओं और जलवायु की जानकारी को भी आवश्यक बताया है। उन्होंने लिखा है कि घुमक्कड़ का यात्रा साधनों की सुविधा के प्रति आग्रही होना अयोग्यता है। उसे तो पीठ पर सामान लादकर चलने का जीवट रखना चाहिए और बैलगाड़ी-खच्चर से लेकर हवाई जहाज तक की यात्रा पर अवलंबित रहना चाहिए। उसका शरीर 'कष्टक्षम' ही नहीं 'परिश्रमक्षम' भी होना चाहिए। स्वावलंबन पर बल देते हुए राहुल लिखते हैं– ''घुमक्कड़ में और गुणों के अतिरिक्त स्वावलंबन की मात्रा अधिक होनी चाहिए। सोने और चाँदी के कटोरों के साथ पैदा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुआ व्यक्ति घुमक्कड़ की परीक्षा में बिलकुल अनुत्तीर्ण हो जाएगा, यदि उसने अपने सोने-चाँदी के भरोसे घुमक्कड़चर्या करनी चाही। वस्तुत: संपत्ति और धन घुमक्कड़ी के मार्ग में बाधक हो सकते हैं।..... केवल उतना ही पैसा पाकेट में लेकर घूमना चाहिए, जिसमें भीख माँगने की नौबत न आये और साथ ही भव्य होटलों और पाठशालाओं में रहने को स्थान न मिल सके। इसका अर्थ यह है कि भिन्न-भिन्न वर्ग में उत्पन्न घुमक्कड़ों को एक साधारण तल पर आना चाहिए।'' (घुमक्कड़ शास्त्र, पृष्ठ-३९) इसी पृष्ठ पर वे लिखते हैं कि घुमक्कड़ धर्म की यह भी विशेषता है कि वह 'किसी जात-पांत को नहीं मानता, न किसी धर्म या वर्ण के आधार पर अवस्थित वर्ग ही को।'

राहुल के इस निष्कर्ष में उनके वैचारिक रुझान का स्पष्ट आभास मिलता है। साम्यवाद का गहराई से अध्ययन, मनन एवं अवलंबन ग्रहण करने वाले राहुल ने घुमक्कड़ी में भी पूंजीवादी प्रवृत्ति का घोर विरोध किया है– ''सोने-चाँदी के बल पर बढ़िया से बढ़िया होटलों में ठहरने, बढ़िया से बढ़िया विमानों की सैर करनेवालों को घुमक्कड़ कहना उस महान् शब्द के प्रति भारी अन्याय करना है। इसलिए यह समझने में कठिनाई नहीं हो सकती कि सोने के कटोरे को मुँह में लिये पैदा होना घुमक्कड़ के लिए तारीफ की बात नहीं है। यह ऐसी बाधा है, जिसको हटाने में काफी परिश्रम की आवश्यकता होती है।'' (घुमक्कड़ शास्त्र, पृष्ठ-३९)

लेखक ने इस वृत्ति के लिए आत्मसम्मान को महत्वपूर्ण माना है तथा चापलूसी की निन्दा की है। उनका विचार है– 'वस्तुत: घुमक्कड़ को अपने आचरण और स्वभाव को ऐसा बनाना है, जिससे वह दुनिया में किसी को अपने से ऊपर न समझे, लेकिन साथ ही किसी को नीचा भी न समझे। समदर्शिता घुमक्कड़ का एकमात्र दृष्टिकोण है, आत्मीयता उसके हरेक बर्ताव का सार है।' (घुमक्कड़ शास्त्र, पृष्ठ-४०)

राहुल ने घुमक्कड़ी को साधन और साध्य दोनों माना है। उनके अनुसार– ''अभी तक लोग घुमक्कड़ी को साधन मानते थे और साध्य मानते थे मुक्ति - देव दर्शन को, लेकिन घुमक्कड़ी केवल साधन नहीं वह साथ ही साध्य भी है।'' (पृष्ठ-१५४) लेखक ने ग्रंथ के समापन में यह आशा व्यक्त की है कि अधिक अनुभव और क्षमता वाले विचारक अपनी समर्थ लेखनी से निर्दोष ग्रंथ की रचना कर सकेंगे।

इस निबंध के आरंभ में कहा गया है कि यात्रा के प्रति आकर्षण ने ही राहुल के कृतित्व को बहुआयामी बनाया है, इसके समर्थन में 'घुमक्कड़ शास्त्र' की इन पंक्तियों का हवाला दिया जा सकता है– ''यात्राओं के लेखक दूसरी वस्तुओं के लिखने में भी कृतकार्य हो सकते हैं। यात्रा में तो कहानियाँ बीच में ऐसे ही आती रहती हैं, जिनके स्वाभाविक वर्णन से घुमक्कड़ कहानी लिखने की कला और शैली को हस्तगत कर सकता है। यात्रा में चाहे प्रथम पुरुष में लिखे या अन्य पुरुष में, घुमक्कड़ तो उसमें शामिल ही है, इसलिए घुमक्कड़ उपन्यास की ओर भी बढ़ने की अपनी क्षमता को पहचान सकता है, और पहले के लेखन का अभ्यास इसमें सहायक हो सकता है।'' (पृष्ठ १४१) इस उद्धरण से यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि राहुल का कहानीकार या उपन्यासकार रूप इसीलिए इतना महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में पृष्ठ १४४ की इन पंक्तियों का भी उल्लेख किया जा सकता है– ''घुमक्कड़ी लेखक और कलाकार के लिए धर्म-विजय का प्रयाण है, वह कला-विजय का प्रयाण है, और साहित्य-विजय का भी। वस्तुत: घुमक्कड़ी को साधारण बात नहीं समझनी चाहिए, यह सत्य की खोज के लिए, कला के निर्माण के लिए, सद्भावनाओं के प्रसार के लिए महान् दिग्विजय है।''

तभी तो घुमक्कड़ स्वामी, घुमक्कड़शास्त्री राहुल का तरुण-तरुणियों को परामर्श है– ''दुनिया में मानुष-जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण-तरुणियों को इस अवसर से हाथ नहीं खोना चाहिए। कमर बाँध लो भावी घुमक्कड़ों। संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है।''

■

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org